Ansh - Journal Of History
A Peer Reviewed International Refereed Journal
E-ISSN No. 2582 – 046X
International Journal For Research In Applied History
Website : https://ansh.shrihinglajenterprise.co.in/

महात्मा गांधी एक सामाजिक प्रेरक के रूप में

Mr. Shesh Karan B. Charan
(M.A., M.ed,NET,PhD Pursing Gujarat University)
Assistant Professor - (Dept. Of History)
Govt. Arts College, Wav (Banaskantha)
Email ID : karanshesh@yahoo.com

सारांश :

विश्व के इतिहास में बहुत कम ऐसे व्यक्तित्व हुए जिन्होंने मानवता पर अपनी एक अलग छाप छोड़ी है। इनमें से एक हैं महात्मा गांधी। उनका जीवन बड़ा ही सरल, सादा परन्तु कठोर नियमों से बंधा हुआ था। उनका जीवन प्रयोगों की एक निरंतर कड़ी था। नैतिकता के प्रयोग का सबसे उत्कृष्ट उदाहरण ब्रिटिश दासता से भारत की आजादी पर उनके द्वारा किया गया नवीन एवं अनोखा प्रयोग है। अधिकांश धार्मिक एवं आध्यात्मिक ग्रंथों में जिस सत्य की बात कही गई है, गांधी जी ने उन्हीं सत्यों के साथ स्वयं को रूपांतरित, परिवर्धित व परिशोधित करने का कार्य किया।

ब्रिटिश शासन द्वारा भारतीयों पर अत्याचार और उनकी दयनीय स्थिति का मुख्य कारण गांधी जी ने भारतीय समाज की नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों में कमी को माना और इससे छुटकारा प्राप्त करने हेतु आधुनिक सभ्यता की आलोचना, देशज संस्कृति व मूल्यों की उपयोगिता को मान्यता देना और ब्रिटिश सत्ता के मुकाबले के लिए नैतिक शक्ति के रूप में अहिंसात्मक तरीके से इस्तेमाल की बात कही।

भेदभाव का मुकाबला करने के लिए गांधी जी के पास सत्य की शक्ति थी। उनकी पद्धति अहिंसक थी, दर्शन नैतिक था, सत्य और अहिंसा उनकी मजबूती। विभिन्न धार्मिक ग्रंथों ने उनके विचार व दर्शन को प्रभावित किया जिसके परिणामस्वरूप एक सर्वोच्च शक्ति ईश्वर पर उनका विश्वास अटूट होता गया और उन्होंने आजीवन सत्य और अहिंसा के अतिरिक्त किसी अन्य विचार और कार्य का समर्थन नहीं किया।

सत्य और अहिंसा को गांधी जी ने स्वयं में ईश्वर का रूप बतलाया है और दोनों को ही साध्य और साधन माना है। अहिंसा सामाजिक जीवन में प्रेम की पहली अभिव्यक्ति है। गांधी जी ने स्वयं यह स्वीकार किया है कि मैंने सत्य की खोज में अहिंसा को प्राप्त किया है। अत: अहिंसा की पवित्रता के महत्व पर गांधी जी ने विशेष बल दिया है और कहा कि व्यक्ति को विचार, भाषण और कर्म से भी अहिंसक होना चाहिए।

इस तरह व्यक्ति को शरीर के साथ मस्तिष्क से भी अहिंसक होना चाहिए। सत्य के लिए साधना और प्रतिबद्धता मानव अस्तित्व को न्याय संगत ठहराता है। यह सत्य आत्म प्रेम को आत्म त्याग में परिवर्तित कर देता है। चूंकि सत्य केवल एक है जो पूरे संसार पर छाया है इसलिए वास्तविक आनंद त्याग

Ansh - Journal Of History
A Peer Reviewed International Refereed Journal
E-ISSN No. 2582 – 046X
International Journal For Research In Applied History
Website : https://ansh.shrihinglajenterprise.co.in/

में है। अहिंसा का पालन करते हुए व्यक्ति आत्मशुद्धि कर लेता है तब उसका अंत:करण सत्य का दर्पण बन जाता है और शुद्ध अंत:करण ही ईश्वर का मंदिर है।

गांधी जी ने व्रत और प्रार्थना को आत्मशुद्धि की प्रक्रिया का सबसे उत्कृष्ट साधन बताया है। इस तरह उन्होंने अहिंसा को परस्पर संबंधों से निकाल कर इसे परिष्कृत किया और इसे एक प्रभावशाली सामाजिक शक्ति के रूप में प्रस्तुत किया जिससे व्यापक स्तर पर उसे व्यवहार में लाया जा सके। गांधी जी ने स्वयं कहा है कि व्यक्ति अहिंसा को (मूल्य के रूप में) न केवल व्यक्तिगत स्तर पर व्यवहार में लाए बल्कि सामाजिक, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में भी इसका प्रयोग करे।

गांधी जी ने व्यक्ति के साथ सम्पूर्ण समाज को नैतिक बनाने का प्रयास किया। उन्होंने कहा कि पृथ्वी का सूक्ष्मतम प्राणी भी ईश्वर का प्रतिरूप होने के कारण तुम्हारे प्यार का अधिकारी है। जो अपने साथ जीवन बिताने वाले मनुष्यों से प्यार करता है वही ईश्वर से प्यार करता है। अहिंसा का सकारात्मक अर्थ पृथ्वी के सभी प्राणियों से प्रेम है और यह अपना है, यह पराया है ऐसा संकीर्ण मनोवृत्ति वाले लोग ही सोचते हैं। उदार चरित्र वालों के लिए तो सम्पूर्ण पृथ्वी ही कुटुम्ब के समान हैं :

अयं निज: परोवेति गणना लघुचेतसाम्। उदार चरितानाम तु, वसुधैव कुटुम्बकम्॥

महात्मा गांधी ने भारत भूमि की स्वाधीनता के लिए अपना संपूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। वे जनमानस में सत्य, अहिंसा, प्रेम, एकता, शांति, सद्भाव, सर्वधर्म सम्भाव, समानता एवं मानवता की भावना जागृत करने के लिए सतत् संघर्षशील रहे। गांधीजी के आदर्शों का प्रभाव से भारतीय समाज भी इससे अछूता नहीं रहा।

भारतीय सनातन संस्कृति सत्य, अहिंसा एवं समन्यवादी संस्कृति है, इसलिए रामायण एवं श्रीरामचरितमानस के रचनाकारों ने श्रीराम के चरित्र को आदर्श मानकर उनके चरित्र का निर्माण किया एवं एक आदर्श राज्य की कल्पना की। गांधीजी भी श्रीराम के चरित्र से प्रभावित थे एवं राम राज्य की कल्पना को साकार करना उनका परम उद्देश्य था। इसलिए, जब राष्ट्रीय आंदोलन के नेतृत्व का मौक़ा उन्हें मिला तो गांधीजी ने उस आंदोलन को शांति से लड़ने का आग्रह अपने राष्ट्रवादी देशभक्तों से किया एवं हिंसा का मार्ग छोड़कर अहिंसा के मार्ग पर चलने की हिदायत दी। यही कारण था कि उस समय के तथा उनके बाद के हिन्दी साहित्य एवं पत्रकारिता पर भी

Ansh - Journal Of History
A Peer Reviewed International Refereed Journal
E-ISSN No. 2582-046X
International Journal For Research In Applied History
Website : https://ansh.shrihinglajenterprise.co.in/

उनके व्यक्तित्व का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक ही हो गया था। जहाँ प्रेमचंद एवं जैनेंद्र जैसे कथाकारों ने अपनी कथाओं में आदर्श चरित्रों का निर्माण किया वहीं कविताओं में मैथिलीशरण गुप्त जैसे राष्ट्रवादी कवियों ने भी एक व्यापक आदर्श प्रस्तुत की।

सत्य महात्मा गांधी के जीवन दर्शन का ध्रुवतारा है। निरपेक्ष सत्य को उन्होंने ईश्वर के साथ समीकृत किया है। इनके अनुसार सत्य ही ईश्वर का दूसरा नाम है। पूर्ण सत्य में सभी प्रकार के ज्ञान (चित्त) भी समाहित हैं और वह ज्ञान शाश्वत आनंद का स्रोत है। इसलिए हम ईश्वर को सच्चिदानंद के नाम से पहचानते हैं।

महात्मा गांधी ने सत्य को सर्वश्रेष्ठ धर्म बताया और अहिंसा को परम कर्तव्य। उनका कहना था कि सत्य की तरह अहिंसा भी सर्वशक्तिमान और असीम है, ईश्वर के समानार्थक है। अहिंसा के बारे में उनका विचार है- अहिंसा का अर्थ है पृथ्वी के किसी जीवधारी को विचार शब्द और किसी कार्य में दुःख देने से बचाना।

धर्म के विषय में गाँधीजी का कहना था कि धर्म जीवन का परम ध्येय है, आत्मदर्शन है, सभी धर्मों का सामंजस्य है, सबकी भलाई के लिए प्रयत्नशील है एवं देशप्रेम को ही अपना कर्तव्य मानता है।

कोई भी धर्म संप्रदाय इंसानियत का गला घोटने की अनुमति नहीँ देता है तो फिर आप हिन्दू-मूसलमान के चक्कर में मानव धर्म को क्यों भूल जाते हैं? आप एक-दूसरे से गले मिलकर मानव धर्म को क्यों नहीं अपनाते?

गांधीजी ने अपने पत्र 'हरिजन' में ईश्वर को जीवन की शक्ति माना है और वही शक्ति हमारा जीवन है। जो व्यक्ति उस महान शक्ति के अस्तित्व को इंकार करता है, वह उस अनंत शक्ति के उपयोग से इंकार करता है और इस प्रकार शक्तिहीन रहता है।

गांधीजी ने अस्पृश्यता निवारण का व्रत लिया था। उनका मानना था कि हम सभी एक ही अग्नि की चिंगारियाँ हैं, उसी ईश्वर के जीव हैं। वह हरिजनोद्धार कर अस्पृश्यता का अंत करना चाहते थे।

गांधीजी दहेज प्रथा तथा नारी उद्धार के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने वेश्या वृत्ति समस्या, विधवा विवाह, दहेज समस्या और नारी शिक्षा की दिशा में काफी प्रयास किए।स्त्री जाति की प्रगति

Ansh - Journal Of History
A Peer Reviewed International Refereed Journal
E-ISSN No. 2582 – 046X
International Journal For Research In Applied History
Website : https://ansh.shrihinglajenterprise.co.in/

और स्वतंत्रता की राह में गांधीजी दहेज का एक बहुत बड़ा रोड़ा मानते हैं।गांधीजी ने नारी उद्धार के विषय में कहा है- "जब तक हम अपने यहाँ की स्त्रियों को माँ, बहन, बेटी समझकर उनका आदर करना नहीं सीखेंगे तब तक भारत का उद्धार नहीं होगा।"नारी की इस करुणाजनक स्थिति का मूल कारण सामंतवाद और पूंजीवाद को माना है।

राजनीतिक क्षेत्र में महात्मा गांधी के स्वदेश और राष्ट्र विषयक विचार महत्त्वपूर्ण हैं। वे इस देश को एकता के सूत्र में बाँधने वाले महान नायक थे।गांधीजी बहुजन हिताय एवं ग्राम स्वराज्य के पक्षपाती थे

सुभद्रा कुमारी चैहान की कविता में भी गांधीजी के असहयोग आंदोलन एवं धर्मनिरपेक्ष समाज के निर्माण की कल्पना का प्रभाव सर्वत्र देखने को मिलते हैं। इनकी कविताओं में भारतीय संस्कृति एवं सांप्रदायिक सद्भाव की झाँकी परिलक्षित होती है-

मेरा मंदिर, मेरी मस्जिद, काबा-काशी यह मेरी,

पूजा पाठ, ध्यान जप-तप है घट-घट वासी यह मेरी।

कृष्णचंद्र की क्रीड़ाओं का अपने आंगन में देखो।
कौशल्या के मातृ मोद को अपने ही मन में देखो।
प्रभु ईसा की क्षमाशीलता, नबी मुहम्मद का विश्वास
जीव दया जिन पर गौतम की आओ देखो इसके पास।

इस प्रकार हम देखते हैं कि आधुनिक हिन्दी साहित्य पर गांधीजी का प्रभाव पूरी परिशुद्धता के साथ व्याप्त है। महात्मा गांधी ने भारत भूमि की स्वाधीनता के लिए अपना संपूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। वे जनमानस में सत्य, अहिंसा, प्रेम, एकता, शांति, सद्भाव, सर्वधर्म सम्भाव, समानता एवं मानवता की भावना जागृत करने के लिए सतत् संघर्षशील रहे। उनका विचार था कि ऊँच-नीच, अमीरी-गरीबी और छुआछूत, अन्याय, उत्पीड़न तथा किसी प्रकार की हिंसा न हो और समस्त भारतवासी निर्भय होकर शांतिमय जीवन व्यतीत कर सकें। अतः सामाजिक जीवन पर उनके विचारों का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक ही है।

Ansh - Journal Of History
A Peer Reviewed International Refereed Journal
E-ISSN No. 2582-046X
International Journal For Research In Applied History
Website : https://ansh.shrihinglajenterprise.co.in/

महात्मा गांधी के विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक एवं अनुकरणीय हैं जितने अपने वक्त में थे। गांधीजी का बचपन, उनके सामाजिक एवं राजनीतिक विचार, सर्वोदय, सत्याग्रह, खादी, ग्रामोद्योग, महिला शिक्षा, अस्पृश्यता, स्वावलंबन एवं अन्य सामाजिक चेतना के विषय आज के युवाओं के शोध एवं शिक्षण के प्रमुख क्षेत्र हैं।

भारतीय युवा हमेशा से गांधीजी के चिंतन का केंद्रबिंदु रहा है। वर्तमान युवा पाश्चात्य प्रभावों से संचालित है। उसकी सोच निरकुंश है। वह अपने ऊपर किसी का हस्तक्षेप नहीं चाहता है। ऐसी परिस्थितियों में गांधीजी के विचारों की सर्वाधिक जरूरत आज के युवाओं को है। गांधीजी हमेशा युवाओं से रचनात्मक सहयोग की अपेक्षा रखते थे।

गांधीजी ने उस पीढ़ी के युवाओं को भयरहित कर अंग्रेजों के दमन का सामना करने का अद्भुत साहस दिया था। वे हमेशा युवा ऊर्जा को सही दिशा देने की बात करते थे। आंदोलन के समय वे युवाओं को हमेशा सतर्क करते रहते थे। सविनय अवज्ञा आंदोलन के समय उन्होंने कहा था हमारा आंदोलन हिंसा का अग्रदूत न बन जाए इसके लिए मैं हर दंड सहने के लिए तैयार हूं, यहां तक कि मैं मृत्यु का वरण करने को भी तैयार हूं। उस समय के युवाओं से उनकी अपेक्षा थी कि वे अपनी ऊर्जा और उत्साह को स्वतंत्रता प्राप्ति में सार्थक योगदान की ओर मोड़ें।

गांधीजी ने हमेशा से युवाओं को वंचित समूहों के उत्थान के लिए प्रेरित किया है। वो व्यक्तिगत घृणा के हमेशा विरोधी रहे हैं। उनका कथन था- 'शैतान से प्यार करते हुए शैतानी से घृणा करनी होगी।' उन्होंने हमेशा युवाओं को आत्मप्रशंसा से बचने को कहा है। उनका कथन है कि जनता की विचारहीन प्रशंसा हमें अहंकार की बीमारी से ग्रसित कर देती है

वर्तमान आईटी प्रोफेशनल के लिए गांधीजी मैनेजमेंट गुरु हैं। वे हमेशा आर्थिक मजबूती के पक्षधर रहे हैं। गांधीजी ने हमेशा पूंजीवादी व समाजवादी विचारधारा का विरोध किया है। उनका मानना था कि देश की अर्थव्यवस्था कुछ पूंजीपतियों के पास गिरवी नहीं होनी चाहिए। उनकी अर्थव्यवस्था के केंद्रबिंदु गांव थे। उनके अनुसार जब तक गांव के युवाओं को गांव में ही रोजगार नहीं मिलता है, तब तक उनमें असंतोष एवं विक्षोभ रहेगा। ग्रामीण बेरोजगारों का शहर की ओर पलायन, जो कि भारत की ज्वलंत समस्या है, का निराकरण सिर्फ कुटीर उद्योग लगाकर ही किया जा सकता हैं।

Ansh - Journal Of History
A Peer Reviewed International Refereed Journal
E-ISSN No. 2582-046X
International Journal For Research In Applied History
Website : https://ansh.shrihinglajenterprise.co.in/

भारतीय साहित्य की युवा पीढ़ी हमेशा से गांधी दर्शन से प्रभावित रही है। उस समय के साहित्य पर गांधी दर्शन का स्पष्ट प्रभाव था। मैथिलीशरण गुप्त की भारत भारती, प्रेमचंद की रंगभूमि, माखनलाल चतुर्वेदी की पुष्प की अभिलाषा, रामधारी सिंह दिनकर की मेरे नगपति मेरे विशाल, सुभद्रा कुमारी चौहान की झांसी की रानी आदि साहित्यिक रचनाएं गांधी दर्शन से ही प्रेरित रही हैं।

मनुष्य प्रजाति की उत्पति से लेकर आज तक की सारी मानवता व्यक्तिगत, सामाजिक, जातीय, राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शांति के लिए प्रयासरत रही है। गांधीजी का मानना था कि समाज में शांति की स्थापना तभी संभव है, जब व्यक्ति भावनात्मक समानता एवं आत्मसंतोष को प्राप्त कर लेगा। गांधीजी के अनुसार शांति की प्राप्ति प्रत्येक युवा का भावनात्मक एवं क्रियात्मक लक्ष्य होना चाहिए तभी उसकी ऊर्जा, गतिशीलता एवं उत्साह राष्ट्रीय हित में समर्पित होंगे।

गांधीजी युवाओं को सामाजिक परिवर्तन का सबसे बड़ा औजार मानते थे। वे हमेशा चाहते थे कि सामाजिक परिवर्तनों, सामाजिक कुरीतियों, सती प्रथा, बाल विवाह, अस्पृश्यता, जाति व्यवस्था के उन्मूलन के विरुद्ध युवा आवाज उठाएं। उनका मानना था कि शोषणमुक्त, स्वावलंबी एवं परस्परपोषक समाज के निर्माण में युवाओं की अहम भूमिका है एवं भविष्य में भी होगी। वर्तमान युवा प्रजातांत्रिक मूल्यों एवं तथ्यपरक सिद्धांतों को मानता है।

हमसे प्रश्न किया जाए कि गांधीजी के स्वतंत्रता प्राप्ति के योगदान से इतर हमकों उनका कौन सा गुण प्रभावित करता है? तो हम सभी यही कहेंगेउनकी अहिंसा और सत्यनिष्ठा।

गांधीजी हमेशा आत्मनिरीक्षण के पक्षधर रहे हैं। गांधीजी के सिद्धांत भी लोकतंत्र एवं सत्य की कसौटी पर कसे-खरे सिद्धांत हैं। गांधीजी की असहमति, उनका बोला गया सत्य आज के युवा को बेचैन कर देता है। उनकी आस्थाएं अडिग हैं। उन्होंने हर विश्वास को बड़ी जांच-परखकर व्रत की तरह धारण किया था। उन्होंने युवाओं के लिए स्वराज को सबसे बड़ा आत्मानुशासन, सत्याग्रह को सबसे बड़ा व्रत, अहिंसा को सबसे बड़ा अस्त्र एवं शिक्षा को सबसे बड़ी नैतिकता माना है।

गांधीजी के दर्शन की क्या प्रासंगिकता है? उनका कहना था कि आज प्रतिस्पर्धात्मक कार्यक्षेत्रों में मानसिक दबाव बहुत है। जब भी काम या पढ़ाई का बोझ उन्हें मानसिक या

Ansh - Journal Of History
A Peer Reviewed International Refereed Journal
E-ISSN No. 2582-046X
International Journal For Research In Applied History
Website : https://ansh.shrihinglajenterprise.co.in/

शारीरिक रूप से शिथिल करता है तो वे लोग गांधीजी की जीवनी 'सत्य के साथ मेरे प्रयोग' पढ़ते हैं जिससे उनके अंदर आत्मबल एवं ऊर्जा का संचार होता है।

आज भारत में युवाओं के सामने ऐसे आदर्श व्यक्तित्वों की कमी है जिसे वो अपना रोल मॉडल बना सकें। गांधीजी हर पीढ़ी के युवाओं के रोल मॉडल रहे हैं एवं होने चाहिए। आज हमारा समाज सांस्कृतिक एवं राजनीतिक परिवर्तनों के दौर से गुजर रहा है। इन सामाजिक परिवर्तनों को सही दिशा देने में गांधीजी के सिद्धांत एवं उनका दर्शन हमारे युवाओं के मार्गदर्शक होने चाहिए।

आज हमारे युवाओं को मौका है कि वे गांधीजी को अपना आदर्श बनाकर सामाजिक परिवर्तन एवं राष्ट्र निर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान दें। हमारे युवा उनके दर्शन को अपनाकर अपने व्यक्तित्व एवं राष्ट्र के विकास में पूर्ण ऊर्जा एवं उत्साह से समर्पित हों।

21 वीं सदी में भी गांधीवाद वो करिश्माई दर्शन है, विचार धारा है जिसके जरिए आज भी विदेशों में शांति, सद्भाव व एकात्मकता को ढूंढ़ा जाता है। एक वाकया, इसी 16 सितंबर का, जापान की काओरी कुरिहारा नामक महिला, जिन्होंने साढ़े सात साल भारत में बिताए, यहां पढ़कर, गांधी दर्शन से जुड़ने का सतत प्रयास किया। अब अपना ज्ञान जापान में जहां-तहां फैला रही हैं।

वह कहती हैं- 'मेरे प्रधानमंत्री शिंजो आबे जब अहमदाबाद में बुलेट ट्रेन परियोजना का शिलान्यास करने तथा जापानी तकनीक देने भारत गए थे तो मेरी इच्छा थी कि वो जापानी नागरिकों के लाभ के लिए भारत से बदले में केवल गांधीवादी मूल्य और दर्शन ले आएं।' यानी बुलेट ट्रेन के बदले में गांधी को भारत से लाएं।

महात्मा गांधी अहिंसावादी थे और अन्याय के विरोध में अपनी आवाज उठाते थे। उनमें दोनों गुण शुरू में नहीं थे। अन्याय के ख़िलाफ़ आवाज उठाने का अस्त्र उन्हें कस्तूरबा गांधी से मिला। विवाह बचपन में हुआ तब वो पत्नी को नियंत्रण में रखना चाहते थे। लेकिन कस्तूरबा खुले विचारों की थीं। हर सवाल का जवाब नहीं देती थीं, हां कई बार तार्किक बहस जरूर कर बैठती थीं। अन्याय का दृढ़ता से विरोध करने की प्रेरणा कस्तूरबा ही थीं।

इसी तरह अहिंसा के गुण उनमें प्रारंभ से नहीं थे। कहते हैं जब बैरिस्टर की पढ़ाई करने विदेश गए थे तभी एक दिन तांगे में बैठने की जगह को लेकर एक अंग्रेज ने उनसे हाथापाई की।

Ansh - Journal Of History
A Peer Reviewed International Refereed Journal
E-ISSN No. 2582-046X
International Journal For Research In Applied History
Website : https://ansh.shrihinglajenterprise.co.in/

उन्होंने हाथ तो नहीं उठाया लेकिन चुप रहकर विरोध प्रदर्शित किया। यहीं से नौजवान गांधी को मूक विरोध करने या कहें अहिंसा का अस्त्र मिला। उनके उपवास का भी रोचक प्रसंग है। विदेश में पढ़ाई के दौरान वो बीमार पड़े। चिकित्सक ने गोमांस का सूप पीने की सलाह दी। बीमारी और कड़ाके की ठंड के बावजूद उन्होंने सिर्फ दलिया खाया। उन्हें भरोसा हुआ कि भूख पर काबू रखा जा सकता है और गांधीजी को उपवास रूपी अस्त्र मिला। गांधीजी दोनों हाथों से लिखने में पारंगत थे। समुद्र में डगमगाते जहाज, तो चलती मोटर और रेलगाड़ी में भी फर्राटे से लिखते थे। एक हाथ थक जाता तो दूसरे से उसी रफ्तार में लिखना गांधीजी की खूबी थी। 'ग्रीन पैम्पलेट' तथा 'स्वराज' पुस्तक चलते जहाज में लिखीं थी। यकीनन जहां लोग अपने काम को लोकार्पित करते हैं वहीं गांधी ने अपना पूरा जीवन ही लोकार्पित कर रखा था।

विलक्षण गांधी अपने पूर्ववर्ती क्रान्तिकारियों से जुदा थे। शोषणवादियों के खिलाफ अहिंसात्मक तरीके अपनाकर स्वराज, सत्याग्रह और स्वदेशी के पक्ष को मजबूत कर वैचारिक क्रान्ति के पक्षधर गांधीजी साधन और साध्य को एक जैसा मानते थे। उनकी सोच थी कि सत्य और अहिंसा एक सिक्के के दो पहलू हैं। रचनात्मक संघर्ष में असीम विश्वास रखने वाले गांधीजी मानते थे कि जो जितना रचनात्मक होगा स्वतः ही उसमें उतनी संघर्षशीलता के गुण आएंगे। स्वतंत्र राष्ट्र ही दूसरे स्वतंत्र राष्ट्रों के साथ मिलकर वसुधैव कुटुम्बकम की भावना फलीभूत कर सकेंगे। वो स्वराज के साथ अहिंसक वैश्वीकरण के पक्षधर थे जिससे दुनिया में स्वस्थ, सुदृढ़ अर्थव्यवस्था हो। गांधीजी मानते थे कि पश्चिमी समाजवाद, अधिनायकतंत्र है जो एक दर्शन से ज्यादा कुछ नहीं। जहां मार्क्स के अनुसार आविष्कार या निर्माण की प्रक्रिया मानसिक नहीं शारीरिक है जो परिस्थितियों और माहौल के अनुकूल होते रहते हैं।

वहीं गांधीजी इससे सहमत नहीं थे कि आर्थिक शक्तियां ही विकास को बढ़ावा देती हैं। यह भी नहीं कि दुनिया की सारी बुराइयों की जड़ आर्थिक कारण ही हैं या युद्धों के जन्मदाता। राजपूत युद्धों को देखें तो इनके पीछे आर्थिक कारण नहीं थे। आध्यात्मिक समाजवाद के पक्षधर महात्मा ने इतिहास की आध्यात्मिक व्याख्या की है। यह उतना ही पुराना है जितना पुराना व्यक्ति की चेतना में धर्म का उदय। उन्होंने केवल बाह्य क्रियाकलापों या भौतिकवाद को सभ्यता-संस्कृति का वाहक नहीं माना बल्कि गहन आंतरिक विकास पर बल दिया। वे मानते थे कि पूंजी और श्रम के सहयोग से ही उत्पादन होता है, जबकि संघर्ष से उत्पादन ठप पड़ता है।

Ansh - Journal Of History
A Peer Reviewed International Refereed Journal
E-ISSN No. 2582-046X
International Journal For Research In Applied History
Website : https://ansh.shrihinglajenterprise.co.in/

गांधीजी की सादगी रूपी अस्त्र के भी अनगिनत किस्से हैं। 1915 में भारत लौटने के बाद कभी पहले दर्जे में रेल यात्रा नहीं की। तीसरे दर्जे को हथियार बना रेलवे का जितना राजनीतिक इस्तेमाल गांधीजी ने किया, उतना शायद अब तक किसी भारतीय नेता ने नहीं किया।

आज जरूरत है कि मानवता के कल्याण के लिए ,राष्ट्र के के निर्माण के लिए गांधी के विचारों को व्यवहार में लाये और उनको आत्मसात करें आज उनके लिए यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी!

संदर्भ सूची

1. बी.बी.सी समाचार पर "महात्मा गाँधी का जीवन और मृत्य" , देखिये अनुभाग "स्वतंत्रता और विभाजन."
2. महात्मा और कवि, सव्यसाचि भट्टाचार्य, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, संस्करण-2005.
3. महात्मा गांधी के विचार, सं०- आर० के० प्रभु एवं यू० आर० राव, नेशनल बुक ट्रस्ट, नयी दिल्ली, संस्करण-2005, पृ०-88.
4. क्रान्त, मदनलाल वर्मा (2006). स्वाधीनता संग्राम के क्रान्तिकारी साहित्य का इतिहास
5. गाँधी, महात्मा . महात्मा गाँधी के संचित लेख . नई दिल्ली: प्रकाशन विभाग, सुचना एवम प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, १९९४.
6. छठा अध्याय, हिंद स्वराज , मोहनदास करमचंद द्वारा .गांधी
7. ऋतुपर्ण घोष : गांधी जी की जीवनी एक आलेख
8. समसायिक समाचार पत्रों की सुर्खियां